20 oh 'krkCnh e Mxjiqj fj;kl re f'k{kk dk fodkl

शक्ति सिंह राठौड़
शोधकर्ता, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड), उदयपुर (राजस्थान)
Email - shaktisinghrathod2@gmail.com

'kks/k lkjk'k डूंगरपुर राज्य राजपूताने का वह भाग है जहाँ भीलों की बस्तियाँ तथा पहाड़ियाँ अधिक है। राजस्थान के सुप्रसिद्ध 22 रजवाड़ों में डूंगरपुर राज्य का विशेष महत्त्व है। डूंगरपुर राज्य का पुराना नाम 'वागड'[1] है। कतिपय संस्कृत के विद्वानों ने वागड़ को संस्कृत रूप प्रदान करने के उद्देश्य से 'वाग्वर'[1], 'वैयागड'[1] और प्राकृत के विद्वानों द्वारा इसका प्राकृत रूप 'बग्गड'[1] बनाया गया। 'वग्गड़' शब्द का अर्थ है जंगल या उजाड़ प्रदेश इस क्षेत्र की प्राचीन राजधानी 'वटप्रदक'[1] थी जिसको आज बड़ौदा नाम से जाना जाता है। राजस्थान के इतिहास में 'वागड़' का नाम लगभग एक सहस्त्राब्दी से दिया गया है। वर्तमान डूंगरपुर की स्थापना के संबंध में वीर सिंह देव (वरसी रावल) और भुचुंड के पुत्र डूंगरसिंह के बारे मेंकथन प्रचलित यह है कि वि. सं. 1415 (ई.सं. 1358) के लगभग डूंगरपुर बसाकर वहाँ अपनी राजधानी स्थापित की।[1]

ey 'kCn डूंगरपुर, वागड, शिक्षा–व्यवस्था, प्रशिक्षण, बालिका शिक्षा.

1 iLrkouk

डूंगरपुर राज्य राजपूताने का वह भाग है जहाँ भीलों की बस्तियाँ तथा पहाड़ियाँ अधिक है। राजस्थान के सुप्रसिद्ध 22 रजवाड़ों में डूंगरपुर राज्य का विशेष महत्त्व है। डूंगरपुर राज्य का पुराना नाम 'वागड'[1] है। कतिपय संस्कृत के विद्वानों ने वागड़ को संस्कृत रूप प्रदान करने के उद्देश्य से 'वाग्वर'[2], 'वैयागड'[3] और प्राकृत के विद्वानों द्वारा इसका प्राकृत रूप 'बग्गड'[4] बनाया गया। 'वग्गड़' शब्द का अर्थ है जंगल या उजाड़ प्रदेश इस क्षेत्र की प्राचीन राजधानी 'वटप्रदक'[5] थी जिसको आज बड़ौदा नाम से जाना जाता है। राजस्थान के इतिहास में 'वागड़' का नाम लगभग एक सहस्त्राब्दी से दिया गया है। वर्तमान डूंगरपुर की स्थापना के संबंध में वीर सिंह देव (वरसी रावल) और भुचुंड के पुत्र डूंगरसिंह के बारे मेंकथन प्रचलित यह है कि वि0 सं. 1415 (ई.सं. 1358) के लगभग डूंगरपुर बसाकर वहाँ अपनी राजधानी स्थापित की।[6]

डूंगरपुर में प्राचीनकाल में प्रचलित शिक्षा–व्यवस्था के बारे में स्पष्ट उल्लेख अब तक नहीं मिला है, परन्तु बारहवीं, तेरहवीं शताब्दी से शिलालेखों, प्रशस्तियों, ताम्रपत्रों, शास्त्र–ग्रन्थों और पुस्तकों की लेखन की अबाध परंपरा मिलती है।[7] इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मध्यकाल से यहाँ शिक्षा का महत्त्व रहा है। राज्य के विभिन्न स्थानों से शिलालेखों, ताम्र पत्रों एवं बहियों की प्राप्ति डूंगरपुर की शैक्षिक जागरुकता का प्रमाण है। ऐसा भी संभव है कि राज्य में अनौपचारिक शिक्षण व्यवस्था का विकास प्राचीन समय से ही चुका होगा। 19वीं शताब्दी के अंत तक डूंगरपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय नहीं खुले थे।गाँवोंमें रहने वाले कुछ ब्राह्मणों ने काशी एवं इलाहाबाद से शिक्षा प्राप्त की थी। डूंगरपुर राज्य में अंग्रेजी पढ़ा हुआ पहला व्यक्ति पोरवाड़ रामचन्द्र और दूसरा कुंवर गंभीर सिंह था। रामचन्द्र बोड़ीगामा का रहने वाला दसा पोरवाड़ महाजन था तथा कुंवर गंभीर सिंह नवलश्याम के ठाकुर सूरमा अभयसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था।[8] 1901 की जनगणना के अनुसार राज्य में 3286 व्यक्ति अथवा 3.28 प्रतिशत लोग पढ़ने लिखने में समर्थ थे जिसमें पुरुष कुल पुरुषों का 6.50 प्रतिशत एवं महिलाएँ कुल महिलाओं का 0.06 प्रतिशत साक्षर थी। इस प्रकार साक्षरता के मामले में डूंगरपुर का राजपूताना के 20 राज्यों एवं चीपशीप में 9वाँ स्थान था।[9]

20वीं सदीं के आरम्भ में राज्य के सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद भी शिक्षा की सुविधाओं के विस्तार पर ध्यान दिया गया। 1899–1900 ईस्वीं के अकाल के कारण सन् 1901 ईस्वीं में डूंगरपुर के विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या 15 रह गई थी।[10]सन् 1900–1901 ईस्वीं में सागवाड़ा, गलियाकोट, साबला एवं अन्य गाँवों में प्राथमिक विद्यालय खोले गए।[11] राजधानी में राजपूत छात्रों के लिए छात्रावास खोला गया, कुछ बालकों को राजघराने के व्यय से मेयो कॉलेज, अजमेर में प्रवेश दिलवाया गया।वर्ष 1902 ई. में केप्टन ड्यूकेट के सम्मान में ड्यूकेट लायब्रेरी स्थापित की गई। यह एक महत्त्वपूर्ण संस्थान था। इसमें अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, मराठी तथा गुजराती आदि भाषाओं की पुस्तकों का संग्रहण किया गया था।[12]सन् 1905–06 ईस्वीं तक डूंगरपुर दरबार द्वारा राज्य में कुल 11 विद्यालयों को खोला जा चुका था, जिसमें कुल 784 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। राजधानी में स्थित विद्यालय को छोड़कर शेष विद्यालयों का माध्यम हिन्दी था।[13]डूंगरपुर नगर में स्थित आंग्ल भाषा विद्यालय में प्राथमिक शिक्षा हिन्दी एवं उर्दू में देने के लिए अलग विभाग था। माध्यमिक शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा (11 वीं कक्षा तक) था तथा हिन्दी, उर्दू, संस्कृत व फारसी द्वितीय भाषा के रुप

में थी।[14]सन् 1905–06 ईस्वींमें राज्य द्वारा माध्यमिक शिक्षा के लिए 1643 रुपये एवं प्राथमिक शिक्षा के लिए 2261 रुपये व्यय किये गये थे। राज्य की प्रशासनिक मशीनरी को तीन विभागों में बाँटा गयाः 1. कवायद, 2. फवायद एवं 3. खास, प्रत्येक के अधीन कई कार्यालयों को रखा।[15] शिक्षा को फवायद विभाग के अधीन रखा गया। राजधानी में स्थित विद्यालय को उच्च प्राथमिक में क्रमोन्नत कर इसे पिन्हें नाम से नव–निर्मित भवन में संचालित किया।[16]वर्ष 1909–10 ईस्वीं में 5 गाँवों में विद्यालय थे। सागवाड़ा के स्कूल को पुनः प्रारम्भ किया गया जबकि ओबरी विद्यालय को कम उपस्थिति के कारण बन्द कर दिया गया। 1909–10 ई. में हिन्दुओं के लिए धर्म उपदेशनी श्री विजय लक्ष्मण संस्कृत पाठशाला शुरु की गई।[17]1 अक्टूबर 1910 ईस्वीं से माध्यमिक शिक्षा को शिक्षण शुल्क से मुक्त कर दिया गया।[18] इस्लामिया विद्यालय को राज्य के अधीन कर दिया गया। 20 गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई ताकि उनकी पढ़ाई नियमित रह सकें। लड़कों के लिए विद्यालय से सटा हुआ एक पुस्तकालय खोला गया।[19] सन् 1910–11 ई. में राज्य के 8 स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या घटकर 521 हो गई। संस्कृत विद्यालय का प्रभारी पंडित भोगीलाल दीक्षित को बनाया गयासाथ ही राजधानी सहित गाँवों के सभी विद्यालयों के निरीक्षण की जिम्मेदारी पिन्हें स्कूल के प्रधानाध्यापक को दी गई। श्री विजय बाल पुस्तकालयको संचालित करने में जागीरदारों एवं जनता ने भी अपना योगदान दिया था।[20] यह शिक्षा के महत्त्व की जनता मे आई जागरुकता का प्रमाण था। महारावल विजयसिंह स्वयं कभी–कभार विद्यालयों का निरीक्षण करते थे। एक बार पिन्हें स्कूल के आकस्मिक निरीक्षण में महारावल को अव्यवस्था दिखने परउन्होने प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों को व्यवस्था में सुधार करने तथा विद्यार्थियों द्वारा विषय–वस्तु को रटने के बजाय समझकर ग्रहण के निर्देश दिये। दिल्ली दरबार को यादगार बनाए रखने के लिए 12 दिसम्बर 1911 ई. को राज्य ने पारड़ा ईटीवार गाँव में विद्यालय खोला, अब ग्रामीण विद्यालयों की संख्या 6 हो गई।[21] विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में निःशुल्क पुस्तकें वितरित की गई।[22]वर्ष 1913–14 ई. में शिक्षा विभाग को दीवान के नियंत्रण में महकमा खास के अन्तर्गत लिए जाने की जानकारी मिलती है। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की पढ़ाई के लिए राज्य हरसंभव मदद करता था। राज्य के दो विद्यार्थी राजकीय उच्च विद्यालय अजमेर में मैट्रीकुलेशन की पढ़ाई कर रहे थे। राज्य की ओर से उन्हें स्टाइफंड दिया गया था। इसी वर्ष विद्यार्थियों की कमी के कारण 3 ग्रामीण विद्यालयों को बन्द कर दिया गया। राज्य में आधा दर्जन निजी विद्यालय संचालित होने की भी जानकारी मिलती है।[23]राज परिवार के सदस्यों की शिक्षा के लिए महल में ही शिक्षक की व्यवस्था होती थी। सन् 1914–15 ईस्वीं में दोनों बड़े महाराजकुमारों को शिक्षा देने के लिए पंडित देवकीनन्दन मिश्रा को नियुक्त किया गया। इसी वर्ष सूरजमल गाँधी को आगे अध्ययन करने थॉमसन सिविल इंजीनियरिंग कॉलेज, रूड़की भेजा गया। राज्य के एक विद्यार्थी का प्रवेश फॉरेस्ट ट्रेनिंग क्लास, श्रीनगर में करवाया गया।[24] वर्ष 1917–18 ईस्वीं में शिक्षा के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। जनवरी 1918 में ठाकुर शिवगोविन्द सिंह जिसने बीकानेर में शिक्षा विभाग के प्रमुख के रूप में कार्य किया था, को सुप्रिंटेंडेण्ट ऑफ एज्युकेशन (शिक्षा अधीक्षक) के पद पर नियुक्त किया गया।उसने शिक्षा विभाग में सुधार करने के लिए एक विशेष रिर्पोट प्रस्तुत की।रिर्पोट के आधार पर ग्रेजुएट प्रधानाध्यापक एवं अण्डर ग्रेजुएट सेकण्ड मास्टर के लिए बेहतर वेतन स्वीकृत किया गया। नया पाठ्यक्रम तैयार करवाया गया।[25] वर्ष 1918–1919 ईस्वीं में 3 नये विद्यालय खड़गदा, धम्बोला व भीलुड़ा में खोले गए।[26] धम्बोलामें विद्यालय 20वीं सदी के प्रारम्भ में खोला गया था जिसे बाद में बन्द कर दिया गया था, अबइसे पुनः शुरु किया गया। शिक्षा के विकास कार्यो में आ रही समस्याओं के समाधान के लिए राज्य के दीवान ने एक शैक्षिक कमेटी गठित की थी। कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में नए वेतन स्केल एवं विद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति की अनुशंसा की। पॉलिटीकल एजेंट ने रिपोर्ट में कुछ परिवर्तन करते हुए उक्त रिपोर्ट को लागू करने की स्वीकृति दे दी। इसी वर्ष ग्रामीण विद्यालयों की संख्या बढ़कर 14 हो गई। पहली बार राज्य के सभी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की कुल संख्या एक हजार को पार कर गई।[27] शैक्षिक कमेटी की रिपोर्ट के परिणाम सकारात्मक रहे। वर्ष 1919–20 ई. में पिन्हें स्कूल की उच्च कक्षा का राजपूताना मिडिल परीक्षा में परीक्षा परिणाम 50 प्रतिशत रहा। विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ने से विद्यालय भवन में एक नई विंग की आवश्यकता पड़ी। ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित 15 विद्यालयों में से 3 विद्यालयों : पीठ, चितरी व सीमलवाड़ा का संचालन स्थानीय जनता एवं ठिकाने द्वारा किया गया परन्तु इन पर नियंत्रण शिक्षा विभाग का ही था।वर्ष के प्रारम्भ में पीठ स्थित विद्यालय पर नियंत्रण विभाग की बजाय स्थानीय ठिकाने का हो गया।[28]राज्य द्वारा शिक्षा के विकास के लिए किये गये प्रयासों का परिणाम सकारात्मक रहा। वर्ष 1922–23 ई. में कुल पंजीकृत 1336 विद्यार्थियों में से 491 विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।

वर्ष 1923–34 ईस्वीं की प्रशासनिक रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष चार नये विद्यालय झोंथरी, पाल सुराता, भुवनेश्वर तथा आंतरी में प्रारम्भ किये गये। झोंथरी एवं सुराता के विद्यालय विशेष रूप से भील बालकों के लिए थे। शिक्षा के विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों का असर राज्य में दिखाई देने लगा था। भील बालक भी अब शिक्षा में रूचि ले रहे थे और कुछ विद्यालयों में तो बालकों के साथ–साथ भील बालिकाएँ भी विद्यालय जा रही थी।[29] वर्ष 1926–27 ईस्वीं में पिन्हें स्कूल को संयुक्त प्रान्त शिक्षा बोर्ड से हाई स्कूल की मान्यता मिली।[30]वर्ष 1928–29 ई. में सागवाड़ा के विद्यालय को प्राथमिक से उच्च प्राथमिक विद्यालय में क्रमोन्नत किया गया।[31]शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे सुधारों के कारण साक्षर व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हुई थी। 1931 ई. की जनगणना के अनुसार डूंगरपुर राज्य में कुल साक्षर व्यक्तियों की संख्या 5863 थी।[32]1935 ई. में ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों के लिए डूंगरपुर में प्रशिक्षण की व्यवस्था आरम्भ की गई जो काफी लाभदायक रही। महारावल लक्ष्मणसिंह ने शिक्षा के प्रसार–प्रचार के लिए अनवरत प्रयास किये। भीलों में शिक्षा का प्रसार करने के लिए महारावल ने

भील पाल सुराता व पाल गलन्दर में विद्यालय खोलने के आदेश दिये।[33]वागड़ सेवा संघ द्वारा संचालित विद्यालयों के लिए सन् 1938–39 ई. में दरबार ने वार्षिक 300 रू. का अनुदान दिया।[34]सन् 1940–41 ई. की प्रशासनिक रिर्पोट के अनुसार राज्य में 65 विद्यालय खुल चुके थे। जिनमें श्री महारावल हाई स्कूल डूंगरपुर, पिन्हें स्कूल, आंग्ल वर्नाक्युलर टाउन स्कूल सागवाड़ा, 3 बालिका विद्यालय (डूंगरपुर, सागवाड़ा व सीमलवाड़ा), 16 ग्रामीण विद्यालय, 9 जागीर विद्यालय, 9 विद्यालय वागड़ सेवा संघ डूंगरपुर द्वारा संचालित, 12 निजी विद्यालय (जिसमें एक हरिजन विद्यालय सम्मिलित) तथा 13 विद्यालय विशेष समुदायों के थे।वयस्कों के लिए 16 रात्रिकालीन विद्यालय जिसमें से 4 शिक्षा विभाग के तथा 12 वागड़ सेवा संघ द्वारा संचालित थे। 9 नवम्बर 1940 को महारावल ने दामड़ी में विद्यालय का उद्घाटन किया। खड़गदा में ग्रामीणों ने एक संस्कृत पाठशाला खोली।[35] इसमें 5 अगस्त 1975 ई. को राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध होकर शास्त्री प्रथम वर्ष की कक्षाएँ प्रारम्भ हुई।[36] वर्ष 1942–43 ईस्वीं में राज्य द्वारा 8 नये विद्यालय देवल, बौखला, गन्धवा, झोंथरी, वसी, कोलखण्डा, गामड़ा एवं माल गाँवों में खोले गयेजिसमें से प्रथम 6 भीलों में शिक्षा का प्रसार करने के लिए थे। जागीर विद्यालयों का प्रबन्धन 2 वर्ष के लिए शिक्षा विभाग को दे दिया गया। विद्यालयों में नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता को महसुस करते हुए इसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया।[37]सेवा संघ द्वारा संचालित अधिकांश विद्यालय भील पालों में थे। प्रारम्भ में सेवा संघ द्वारा स्थापित विद्यालयों को राज्य की ओर से सहयोग मिला परन्तु अगस्त 1942 ई. के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सेवा संघ के सम्मिलित होने से राज्य एवं सेवा संघ एक–दूसरे के विरोधी हो गये।[38] अतः राज्य ने सेवा संघ द्वारा संचालित विद्यालयों को बन्द करने का आदेश दिया। राज्य नहीं चाहता था कि सेवा संघ द्वारा संचालित विद्यालयों द्वारा यहाँ की जनता में राष्ट्रीयता की भावना विकसित हो। 1947 ई. में घटित रास्तापाल की घटना का कारण भी संभवतः यहीं था। वर्ष 1943–44 ईस्वीं में पिण्डावल में हिन्दी प्राथमिक विद्यालय खोला गया। इस वर्ष विद्यालयों की कुल संख्या 82 हो गई। जिनमें कुल 4376 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों की दैनिक औसत उपस्थिति 67 प्रतिशत थी।[39]

1943–44 ई. तक राज्य में विद्यालयों की संख्या 82 तक पहूँच गई थी। इनमें शिक्षा विभाग के विद्यालयों के अलावा जागीर एवं निजी विद्यालय भी सम्मिलित थे। जिनके अपने–अपने पाठ्यक्रम थे।

राजस्थान की स्थापना से पूर्व प्रत्येक रियासत की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य प्रणाली अलग–अलग थी। इसलिए राज्य सरकार ने शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। वर्ष 1950 में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा मुख्यालय, राजस्थान बीकानेर की स्थापना की गई।[40] डूंगरपुर जिले के शिक्षा विभाग को भी इसके अधीन लाया गया।डूंगरपुर जिले में सन् 1950 ई. में डिप्टी इंस्पेक्टर का पद सृजित किया गया। डूंगरपुर एवं सागवाड़ा में सब–डिप्टी इंस्पेक्टर की नियुक्ति की गई। 1943–44 ई. में पंजीकृत 82 विद्यालयों की तुलना में वर्ष 1951 ई. में जिले में 98 शैक्षिक संस्थान थे। वर्ष 1957–58 ई. में डूंगरपुर जिले में 2 हायर, 4 हाई, 19 मिडिल, 9 जुनियर बेसिक, 276 प्राथमिक और एक विशेष विद्यालय खुल चुका था। 1959 ई. में राज्य में पंचायती राज व्यवस्था लागू होने के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों की प्रबंध व्यवस्था का दायित्व जिला परिषद व पंचायत समितियों को सौंप दिया गया। वर्ष 1961–62 ई. में जिले में कुल पंजीकृत विद्यालयों की संख्या 600 थी। वर्ष 1965–66 ई. में कुल विद्यालयों की संख्या 626 हो गई जिनमें 4 हायर, 8 हाई, 35 मिडिल, 62 जुनियर बेसिक, 344 प्राथमिक और 173 विशेष विद्यालय सम्मिलित थे।[41]सरकार द्वारा किये गये प्रयासों से शिक्षा के विस्तार की प्रक्रिया अनवरत जारी रही। ईस्वीं संवत् 1978–79 में जिले में शिक्षण संस्थाओं की संख्या 692, 1979–80 में 708, 1980–81 में 760, 1981–82 में 767 तथा 1982–83 में 778 हो गई।[42] 1982–83 ई. में जिले में उच्च माध्यमिक व माध्यमिक में कुल पंजीकृत विद्यार्थी 12803, उच्च प्राथमिक में 27388, प्राथमिक में 55132, व्यावसायिक शिक्षा में 79 तथा अन्य पाठ्यक्रमों में 57 थे। सभी पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत कुल विद्यार्थी 96822 थे।[43] 1990–91 ई. में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या 139958 थी। जिसमें से महाविद्यालय में 873, उच्च माध्यमिक व माध्यमिक में 27623, उच्च प्राथमिक में 43645, प्राथमिक में 67411, व्यावसायिक शिक्षा (आई.टी.आई.) में 154 तथा अन्य प्रशिक्षण संस्थान में 252 विद्यार्थी पंजीकृत थे।[44]

बालिकाओं की शिक्षा के लिए डूंगरपुर की श्रीमती नारायण कौर पण्ड्या एवं बिजनौर की श्रीमती बालासुन्दरी के प्रयासों से दिसम्बर 1907 ईस्वीं में डूंगरपुर नगर में कन्या पाठशाला खोली गई एवं 1909–10 ईस्वीं से इसका नाम देवेन्द्र कन्या पाठशाला कर दिया गया।[45] स्त्री शिक्षा के विकास का यह एकप्रारम्भिक प्रयास था। वर्ष 1909–10 ईस्वीं में इसकी औसत उपस्थिति 22 से बढ़कर 30 हो गई।[46] श्रीमती देवकी बाई के प्रयासों से कन्या पाठशाला ने वर्ष 1910–11 ई. में प्रगति की।[47] इसी वर्ष बालिकाओं की संख्या 48 हो गई। सन् 1916–17 ईस्वीं में यहाँ हिन्दी एवं अन्य विषयों को उच्च प्राथमिक स्तर तक पढ़ाया जाता था, साथ ही सिलाई व कढ़ाई–बुनाई की भी शिक्षा दी जाती थी।[48] वर्ष 1922–23 ईस्वीं में कन्या पाठशाला में कार्मिकों की बड़ी आवश्यकता थी, परन्तु योग्य एवं क्षमतावान अध्यापिकाएँ नही मिल पा रही थी। यद्यपि वर्ष की समाप्ति तक एक अध्यापिका की नियुक्ति कर दी गई।[49] सन् 1925–26 ई. में सागवाड़ा में बालिका विद्यालय खोला गया।[50]विभिन्न स्थानों पर बालिका विद्यालय खुलने से महिला साक्षरता में वृद्धि हुई।वर्ष 1939–40 ई. में देवेन्द्र पाठशाला को मिडिल स्कूल का दर्जा दिया गया। वर्ष 1943 ई. में सभी बालिका विद्यालयों का कुल नामांकन 233 था।[51]

1968–69 ई. में बालिका विद्यालयों की संख्या बढ़कर 21 हो गई तथा जिले में कुल पंजीकृत 39526 विद्यार्थियों में 7139 लड़कियाँ थी।[52] 1982–83 ई. में 1984 उच्च माध्यमिक व माध्यमिक में, 7264 उच्च प्राथमिक में, 14978 प्राथमिक में, 2 व्यावसायिक शिक्षा में तथा 10 छात्रायें अन्य पाठ्यक्रमों में पंजीकृत थी। कुल 24363 छात्रायें विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत थी।[53] 1990–91 ई. में पढ़ाई करने वाली छात्रायें 44182 थी।[54] राज्य में प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य से 1999 ई. में राजीव गांधी पाठशालाओं की शुरुआत हुई। जिससे दूर–दराज स्थित फलों, पालों एवं गाँवोंमें बालिकाओं को अपने घर के निकट ही विद्यालय से जुड़ने का अवसर मिला। 2000–2001 ई. में जिले में 421 राजीव गांधी पाठशालाएँ संचालित थी। 2000–01 ई. में विभिन्न पाठ्यक्रमों में पंजीकृत छात्राओं की कुल संख्या 114601 हो गई। एक दशक में विभिन्न संस्थानों में अध्ययनरत छात्राओं की संख्या बढ़कर 70419 हुई। बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्ति का अवसर देने के लिए जिला मुख्यालय पर राजकीय कन्या महाविद्यालय खोला गया। जिले में बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती भागीदारी बालिका शिक्षा के विस्तार का परिचायक है।

lUnHkZ lwph %

---

1 ओझा,गौरीशंकर हीराचन्द डूंगरपुर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, सं0 2000, पृ0 1

2 संवत् 1571 वर्षे कार्तिकवदी (दि) 3 शनौ वाग्वरदेशे राजाधिराज उलश्री उदयसिंह विजयराज्ये नूतनेपुरें बांसवाड़ा राज्य के नौगावां गाँव के जैन मन्दिर की प्रशस्ति

3 स्वस्ति श्रीनृपविक्रमार्क्कसमयातीत संवत् 1593 वर्षे
वैशाखवदि 1 गुरौ अनुराधानक्षत्रे शिवनामयोग (गे)
वैयागडदेशे राजश्रीराउल जगमालजीविजयराज्ये
बांसवाड़ा राज्य के छींच गाँव की ब्रह्मा की मूर्ति का लेख (गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, सं0 2000, पृ0 1)

4 तओ हम्मीर जुवराओ वग्गड देसं मुहडासयाइं नयराणि य मंजिय आसावल्लीए पत्तो। कणणादेवराओ अ नट्ठो।

5 जयसमन्द झील के निकट झाड़ोल गाँव के शिव मन्दिर का लेख वि0 स0 1308 कार्तिक सुदि 15
जिसकी छाप महारावल विजय सिंह शोध अभिलेखागार डूंगरपुर में उपलब्ध है।

6 वागड़ भूमि (पाक्षिक पत्रिका) अंक 1, अक्टूबर 1977, पृ0 2

7 पुरोहित महेश, डूंगरपुर उन्नीसवीं से बीसवीं सदी की ओर, पृष्ठ 8

8 डूंगरपुर राज्यपत्र, रविवार, तारीख 5 जनवरी सन् 1941 ईस्वीं, पृष्ठ 14

9 आर्स्कीन के.डी., राजपुताना गजेटीयर्स, वॉल्युम II–ए, द मेवाड रेजिडेन्सी 1908, पार्ट II, डूंगरपुर स्टेट, पृष्ठ 153

10 पुरोहित महेश, डूंगरपुर उन्नीसवीं से बीसवीं सदी की ओर, पृष्ठ 13

11 रिपोर्ट नं. 593, दिनांक खेरवाड़ा शिविर, 27 मार्च 1901, फॉम– लेफ्टीनेंट ए.बी. ड्रमण्ड,आई.एस.सी. असिस्टेंट रेजिडेंट इन मेंवाड, टू– रेजिडेंट इन मेंवाड, उदयपुर

12 रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1970–71, पृष्ठ 30

13 आर्स्कीन के.डी., राजपुताना गजेटीयर्स, वॉल्युम II–ए, द मेवाड रेजिडेन्सी 1908, पार्ट II, डूंगरपुर स्टेट, पृष्ठ 153

14 वहीं, पृष्ठ 153

15 मिश्रा पंडित ठाकुर प्रसाद एवं गुप्ता किशोरी लाल, शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ द डूंगरपुर अथवा वेस्टर्न बागड, फ्रॉम द अर्लिएस्ट टाइम्स टू इयर 1909 ए.डी., प्राक्कथन, पृष्ठ 4

16 पुरोहित महेश, डूंगरपुर उन्नीसवीं से बीसवीं सदी की ओर, पृष्ठ 14

17 सहगलके.के., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर्स डूंगरपुर, निदेशालय, जिला गजेटीयर, राजस्थान सरकार, जयपुर, पृष्ठ 280

18 एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1966–67, पृष्ठ 50

19 मिश्रा पंडित ठाकुर प्रसाद एवं गुप्ता किशोरी लाल, शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ द डूंगरपुर अथवा वेस्टर्न बागड, फ्रॉम द अर्लिएस्ट टाइम्स टू इयर 1909 ए.डी., प्राक्कथन, , पृष्ठ 5

20 एन्यूल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1967–68, पृष्ठ 53

21 एन्यूल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1968–69, पृष्ठ 63

22 सहगलके.के., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर्स डूंगरपुर, निदेशालय, जिला गजेटीयर, राजस्थान सरकार, जयपुर, पृष्ठ 280

[23] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1970–71, पृष्ठ 22,23
[24] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1971–72, पृष्ठ 3
[25] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1974–75, पृष्ठ 28
[26] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1975–76, पृष्ठ 27
[27] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1976–77, पृष्ठ 36,66
[28] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, फॉर संवत इयर 1977–78, पृष्ठ 37
[29] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1981–82, पृष्ठ 19
[30] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1983–84, पृष्ठ 19
[31] पुरोहित महेश, डूंगरपुर उन्नीसवीं से बीसवीं सदी की ओर, पृष्ठ 15
[32] सेन्सस ऑफ इण्डिया, 1931, वॉल्यूम 27, राजपूताना एजेन्सी, रिपोर्ट एण्ड टेबल्स, पृष्ठ 189
[33] डूंगरपुर राज्यपत्र, रविवार, मिति आश्विन कृष्णा नौमी संवत् 1996, पृष्ठ 17
[34] सहगलके.के., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर्स डूंगरपुर, निदेशालय, जिला गजेटीयर, राजस्थान सरकार, जयपुर, पृष्ठ 281
[35] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1997–98, पृष्ठ 46
[36] परिचयात्मक विवरण, सत्र 2005–06, श्री गोवर्द्धन विद्या विहार, खड़गदा, जिला–डूंगरपुर, राजस्थान, पृष्ठ 58
[37] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, फॉर संवत इयर 1999–2000, पृष्ठ 52,53
[38] पुरोहित महेश, डूंगरपुर उन्नीसवीं से बीसवीं सदी की ओर, पृष्ठ 17
[39] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 2000–2001, पृष्ठ 54
[40] शिक्षा विभाग राजस्थान की अधिकृत वेबसाइट से प्राप्त
[41] सहगलके.के., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर्स डूंगरपुर, निदेशालय, जिला गजेटीयर, राजस्थान सरकार, जयपुर, पृष्ठ 284
[42] सांख्यिकीय रूपरेखा डूंगरपुर, 1984, आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय राजस्थान, जयपुर, पृष्ठ 134
[43] वहीं, पृष्ठ 137,139
[44] सांख्यिकीय रूपरेखा 1992, जिला सांख्यिकीय कार्यालय डूंगरपुर, पृष्ठ 126,128,130
[45] पुरोहित महेश, डूंगरपुर उन्नीसवीं से बीसवीं सदी की ओर, पृष्ठ 19
[46] ए डमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1966–67, पृष्ठ 50,51
[47] एन्यूल एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट फॉर संवत इयर 1967–68, पृष्ठ 52
[48] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1973–74, पृष्ठ 26
[49] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 1979–80, पृष्ठ 20
[50] सहगलके.के., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर्स डूंगरपुर, निदेशालय, जिला गजेटीयर, राजस्थान सरकार, जयपुर, पृष्ठ 281
[51] रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द डूंगरपुर स्टेट, राजपुताना, फॉर संवत इयर 2000–2001, पृष्ठ 56
[52] सहगलके.के., राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर्स डूंगरपुर, निदेशालय, जिला गजेटीयर, राजस्थान सरकार, जयपुर, पृष्ठ 284
[53] सांख्यिकीय रूपरेखा डूंगरपुर, 1984, आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय राजस्थान, जयपुर, पृष्ठ 137,139
[54] सांख्यिकीय रूपरेखा 1992, जिला सांख्यिकीय कार्यालय डूंगरपुर, पृष्ठ 130